हिन्दी

अध्याय-14: चंद्र गहना से लौटती बेर

SHIVOM CLASSES 8696608541

-केदारनाथ अग्रवाल

सारांश

देख आया चंद्र गहना।

देखता हूँ दृश्य अब मैं

मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।

एक बीते के बराबर

यह हरा ठिगना चना,

बाँधे मुरैठा शीश पर

छोटे गुलाबी फूल का,

सजकर खड़ा है।

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- चंद्र गहना से लौटती बेर कविता की प्रस्तुत पंक्तियों में कवि केदारनाथ अग्रवाल जी ने गांव की सुंदरता का बड़ा ही मनोहर उल्लेख किया है। वे चंद्र गहना नामक गांव घूमने गए हुए थे और जब वे वापस आ रहे थे, तो उन्हें रास्ते में एक खेत दिखाई देता है। अभी उनकी ट्रेन को आने में भी बहुत वक्त था, इसी कारण वो खेत की प्राकृतिक सुंदरता को निहारने के लिए एक मेड़ (दो खेतों के बीच मिट्टी का बना हुआ रास्ता) पर बैठ जाते हैं और खेतों में उगी फ़सलों तथा पेड़-पौधों को देखने लगते हैं। आगे कवि कहते हैं कि मैंने चंद्र गहना नामक गांव देख लिया है, अब मैं इस खेत की मेड़ पर बैठकर खेत की प्राकृतिक सुंदरता का लाभ उठा रहा हूँ।

आगे चने के पौधे का बड़ा ही सजीला मानवीकरण करते हुए, कवि कहते हैं कि एक बीते (एक पंजे की लम्बाई के बराबर, ज्यादा से ज्यादा 1 फुट) की लम्बाई वाला यह हरा चने का पौधा खेतों के बीच लहलहा रहा है। चने के पौधों पर गुलाबी रंग के फूल खिले हुए हैं और उन्हें देखने से ऐसा लग रहा है, मानो कोई दूल्हा पगड़ी पहनकर सज धज कर शादी के लिए तैयार हो रहा हो।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

पास ही मिलकर उगी है।

बीच में अलसी हठीली

देह की पतली, कमर की है लचीली,

नील फूले फूल को सर पर चढ़ा कर

कह रही, जो छुए यह

दूँ हृदय का दान उसको।

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- इन पंक्तियों में कवि केदारनाथ अग्रवाल जी ने अलसी के पौधों का मानवीकरण किया है। अलसी का पौधा बहुत ही पतला होता है और थोड़ी-सी हवा के कारण भी हिलने लगता है और झुक कर फिर खड़ा हो जाता है। इसलिए कवि ने उसे यहाँ देह की पतली और कमर की लचीली कहा है। उन्होंने चने के पौधों के पास में ही उगे हुए, अलसी के पौधों को नायिका के रूप में दिखाया है।

उनके अनुसार यह नायिका बहुत ही जिद्दी है और इसीलिए हठपूर्वक इसने चने के पौधों के मध्य अपना स्थान बना लिया है। इन पौधों में नीले रंग के फूल खिले हुए हैं, जो ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो नायिका अपने हाथों में फूल पकड़ कर अपने प्रेम का इज़हार कर रही हो। जो उसके इस प्रेम को स्वीकार करेगा, वो उस पर अपना प्रेम लुटाने के लिए तैयार खड़ी है।

और सरसों की न पूछो-

हो गयी सबसे सयानी,

हाथ पीले कर लिए हैं

ब्याह-मंडप में पधारी

फाग गाता मास फागुन

आ गया है आज जैसे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- इन पंक्तियों में कवि ने खेतों के प्राकृतिक सौंदर्य की तुलना विवाह के मंडप से की है। खेतों में चने और अलसी के पौधे अपने सौंदर्य का प्रदर्शन कर रहे हैं, वहीँ इन सब के बीच, सरसों की तो बात ही निराली है। सरसों के पौधे पूरी तरह बढ़ चुके हैं और उन पर पीले रंग के फूल भी खिल चुके हैं। ये पीले पुष्प सूर्य की रौशनी में किसी नयी दुल्हन के हाथों की तरह चमक रहे हैं। सरसों की फसल पक चुकी है, इसीलिए कवि कहते हैं कि कन्या शादी के लायक हो चुकी है और अपने हाथ पीले करके इस खेत-रूपी ब्याह मंडप पधारी है। ऐसा लग रहा है, जैसे फागुन का महीना स्वयं फाग (होली के समय गाया जाने वाला गीत) गा रहा है।

देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है,

प्रकृति का अनुराग-अंचल हिल रहा है

इस विजन में,

दूर व्यापारिक नगर से

प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- इन पंक्तियों में कवि ने गांव की प्राकृतिक सुंदरता एवं शहर की तुलना की है। उनके अनुसार, शहर में रह रहे लोगों के पास इतना वक्त भी नहीं होता कि वो इस प्राकृतिक सौंदर्य का लाभ उठा पाएं। निरंतर होते निर्माण के कारण शहर में हर जगह सिर्फ कंक्रीट की इमारतें ही दिखाई देती हैं। इसलिए उनके मन का प्रेम-भाव बाहर नहीं आ पाता और शहरी लोग स्वार्थी हो जाते हैं, जबकि दूसरी ओर कवि को गांव के प्राकृतिक वातावरण में अनुपम शांति मिल रही है।

कवि कहते हैं कि चारों तरफ सुनसान स्थान होने के बावजूद भी खेतों में इतना प्राकृतिक सौंदर्य भरा है, कि ऐसा लग हो रहा है मानो यहाँ कोई स्वयंवर चल रहा हो। सभी सज-धज के खड़े हैं और मंडप भी सजा हुआ है। कन्याएँ सज कर अपने हाथ में फूलों की माला लेकर दूल्हे का चुनाव कर रही हैं। यहाँ लड़की से सरसों एवं अलसी के पौधों को संबोधित किया गया है, जबकि दूल्हे से चने के पौधे को संबोधित किया गया है। ऐसा दृश्य देखकर कवि के अंदर भी प्रेम-भावना जागने लगती है। इसीलिए कवि ने कहा है, व्यापारिक नगर से दूर प्रेम की यह प्रिय भूमि अधिक उपजाऊ है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

और पैरों के तले है एक पोखर,

उठ रहीं इसमें लहरियाँ,

नील तल में जो उगी है घास भूरी

ले रही वो भी लहरियाँ।

एक चांदी का बड़ा-सा गोल खम्भा

आँख को है चकमकाता।

हैं कई पत्थर किनारे

पी रहे चुप चाप पानी,

प्यास जाने कब बुझेगी!

SHIVOM CLASSES 8696608541

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- चंद्र गहना से लौटती बेर कविता की इन पंक्तियों में कवि ने खेत के किनारे तालाब एवं उसमें पड़ने वाली सूर्य की रौशनी का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है। वे मेड़ पर जहाँ बैठे हुए हैं, उसके दूसरी ओर स्थित तालाब के जल में हवा के साथ लहरें उठ रही हैं। उसके साथ ही, बगल में उगी भूरी घास भी यूँ हिलने लगती है, मानो आकाश में पतंगें उड़ रही हों। जब तालाब के जल में सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो उसका प्रतिबिम्ब जल पे एक चांदी के खम्बे की तरह दिखाई देता है, जो कवि की आँखों में निरंतर चमक रहा है और लेखक को उसकी ओर देखने में मुश्किल हो रही है।

दूसरी तरफ, तालाब के किनारे कई पत्थर पड़े हुए हैं, जब-जब तालाब में लहरें उठ रही हैं, तब तब तालाब का जल जाकर पत्थर को भिगो रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो पत्थर चुपचाप पानी पीते जा रहे हैं, परन्तु अभी तक उनकी प्यास नहीं बुझी और पता नहीं कब उनकी प्यास बुझेगी। इस तरह कवि ने अपनी इन पंक्तियों में प्रकृति का बड़ा ही सुन्दर मानवीकरण किया है।

चुप खड़ा बगुला डुबाये टांग जल में,

देखते ही मीन चंचल

ध्यान-निद्रा त्यागता है,

चट दबा कर चोंच में

नीचे गले को डालता है!

एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया

श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन

टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,

एक उजली चटुल मछली

चोंच पीली में दबा कर

दूर उड़ती है गगन में!

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- कवि देखते हैं कि तालाब के किनारे उथले जल में कुछ बगुले ऐसे खड़े हैं, मानो वो जल में पैर डुबाये खड़े-खड़े सो रहे हों। लेकिन, जैसे ही उन्हें जल के अंदर कोई मछली हिलती-डुलती महसूस होती है या दिखाई देती है, तो वो अपनी चोंच तेजी से जल के अंदर डाल कर उस मछली को पकड़ कर निगल जाता है। वहीँ दूसरी तरफ, जल के ऊपर एक काले रंग के सिर वाली चिड़िया उड़कर चक्कर लगाते हुए तालाब के जल में नजर रख रही है। जैसे ही उसे जल के अंदर मछली नजर आती है, वह बिजली की तेजी से अपने सफ़ेद पंखो के सहारे जल को चीरती हुई गोता लगाकर अंदर चली जाती है और उस मछली पर टूट पड़ती है। उस चमकती हुई मछली को वह काले माथे वाली चिड़िया अपनी पीली चोंच में दबाकर ऊपर आकाश में दूर उड़ जाती है।

औ' यहीं से-

भूमि ऊंची है जहाँ से-

रेल की पटरी गयी है।

ट्रेन का टाइम नहीं है।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ,

जाना नहीं है।

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- कवि जहाँ बैठकर गांव के प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ़ उठा रहे हैं, वहीं से कुछ दूर जाकर भूमि ऊँची हो गई है, जिसके पार देखा नहीं जा सकता। उस ऊँची उठी भूमि के दूसरी तरफ ही रेल की पटरी बिछी हुई है। वहीं कहीं रेलवे स्टेशन है, जहाँ से कवि वापस जाने के लिए ट्रेन पकड़ने वाले हैं। परन्तु अभी ट्रेन को आने में बहुत समय बाकी है, इसलिए लेखक पूरी स्वतंत्रता के साथ खेतों के मध्य बैठकर सभी जगह ताक-ताक कर प्राकृतिक सौंदर्य का मजा ले रहे हैं। ये सब उन्हें बहुत ही आनंददायी लग रहा है, क्योंकि शहर में उन्हें रोज-रोज ऐसे सौंदर्य को देखने का मौका नहीं मिलता।

चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी

कम ऊंची-ऊंची पहाड़ियाँ

दूर दिशाओं तक फैली हैं।

बाँझ भूमि पर

इधर उधर रीवां के पेड़

कांटेदार कुरूप खड़े हैं।

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- कवि की नजर खेतों से उठ कर दूर जाती है, तो उन्हें चित्रकूट की असमान रूप से फैली ऊँची-नीची पहाड़ियां नजर आती हैं, जो ज्यादा ऊँची नहीं हैं, लेकिन बहुत दूर तक फ़ैली हुई हैं। इसलिए कवि ने कहा है कि ये दूर दिशाओं तक फ़ैली हुई हैं। कवि को ये पहड़ियाँ उपजाऊ भी नजर नहीं आ रही हैं, क्योंकि उन पर रीवां नामक कांटेदार वृक्षों के अलावा और कोई हरियाली नहीं है।

सुन पड़ता है

मीठा-मीठा रस टपकाता

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

सुग्गे का स्वर

टें टें टें टें;

सुन पड़ता है

वनस्थली का हृदय चीरता,

उठता-गिरता

सारस का स्वर

टिरटों टिरटों;

मन होता है-

उड़ जाऊँ मैं

पर फैलाए सारस के संग

जहाँ जुगुल जोड़ी रहती है

हरे खेत में,

सच्ची-प्रेम कहानी सुन लूँ

चुप्पे-चुप्पे।

चंद्र गहना से लौटती बेर भावार्थ:- चंद्र गहना से लौटती बेर कविता की अंतिम पंक्तियों में कवि ने वनस्थली में गूंजती तोते और सारसों की मधुर आवाज़ों वर्णन किया है। कवि को बीच-बीच में तोते की टें-टें की ध्वनि सुनाई देती है, जो इस शांत वातावरण में वन के अंदर से आ रही है। इस मधुर ध्वनि को सुनकर कवि का मन आनंद से भर उठता है और उनका मन भी तोते की इस मधुर ध्वनि की ताल से ताल मिलाने को करता है।

इसी बीच, कवि को सारस की जंगल को भेद देने वाली ध्वनि सुनाई पड़ती है, जो कभी घटती है, तो कभी बढ़ती है। वास्तव में यह सारस के जोड़े के आपसी प्रेम का संगीत है, जिसे सुनकर कवि यह कल्पना करता है कि वह भी अपने पंख फैलाए सारस के संग उड़ कर हरे खेतों के बीच चला

SHIVOM CLASSES 8696608541

जाए। फिर छुप कर सारसों के सच्चे प्रेम की कहानी सुने, ताकि उन्हें कवि द्वारा कोई तकलीफ़ न हो और वे उड़ ना जाएं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न-अभ्यास प्रश्न (पृष्ठ संख्या 122)

प्रश्न 1 'इस विजन में .... अधिक है' - पंक्तियों में नगरीय संस्कृति के प्रति कवि का क्या आक्रोश है और क्यों?

उत्तर- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने नगर के मतलबी रिश्तों पर प्रहार करते हुए कहा है कि यहाँ शहर जैसा स्वार्थ नहीं है। यहाँ के लोगों के बीच एक दूसरे के प्रति सच्चा प्रेम है, सच्ची सहानुभूति है। गाँव से विपरीत शहर के लोगों में स्वार्थी प्रवृति अधिक देखने को मिलती है, यहाँ से मनुष्यों का आपसी प्रेम व्यवहार लुप्त होता जा रहा है। इसलिए कवि ने नगरीय संस्कृति के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है।

प्रश्न 2 सरसों को ' सयानी ' कहकर कवि क्या कहना चाहता होगा?

उत्तर- यहाँ सरसों के सयानी से कवि यह कहना चाहता है कि सरसों की फसल अब पूरी तरह तैयार हो चूकी है अर्थात् वह कटने के लिए पूरी तरह तैयार है।

प्रश्न 3 अलसी के मनोभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- कवि ने अलसी को एक सुंदर नायिका के रुप में चित्रित किया है। उसका शरीर पतला और कमर लचीली है। वह अपने सिर पर नीले फूल लगाकर यह सन्देश दे रही है कि प्रथम स्पर्श करने वाले को हृदय से अपना स्वामी मानेगी। वह सभी को प्रेम का निमंत्रण दे रही है।

प्रश्न 4 अलसी के लिए ‘हठीली’ विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर- अलसी के लिए ‘हठीली’ विशेषण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि हठपूर्वक चने के पौधे के पास उग आई है। उसकी पतली देह बार-बार हवा के कारण झुक जाती है परन्तु वह फिर सीधे खड़े होकर चने के बीच नज़र आने लगती है।

प्रश्न 5 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है?

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर- 'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' से कवि का तात्पर्य नगर के सुख-सुविधा तथा स्वार्थपूर्ण जीवन से है, जिसे पाकर भी लोगों की इच्छाएँ खत्म नहीं होती हैं।

चाँदी के बड़े खंभे के माध्यम से कवि ने मानव प्रवृति का अत्यंत सूक्ष्म वर्णन किया है।

प्रश्न 6 कविता के आधार पर 'हरे चने' का सौंदर्य अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

उत्तर- कवि ने यहाँ चने के पौधों का मानवीकरण किया है। चने का पौधा बहुत छोटा-सा है। उसके सिर पर फूला हुआ गुलाबी रंग का फूल ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो वह अपने सिर पर गुलाबी रंग की पगड़ी बाँधकर, सज-धज कर स्वयंवर के लिए खड़ा हो।

प्रश्न 7 कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कहाँ-कहाँ किया है?

1.

यह हरा ठिगना चना, बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का, सज कर खड़ा है।

2.

पास ही मिल कर उगी है, बीच में अलसी हठीली।
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है, जो छुए यह दूँ हृदय का दान उसको।

3.

और सरसों की न पूछो-हो गई सबसे सयानी, हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी।

4.

हैं कई पत्थर किनारे, पी रहे चुपचाप पानी

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर- कविता की कुछ पंक्तियों में कवि ने प्रकृति का मानवीकरण किया है; जैसे–

1. यहाँ हरे चने के पौधे का छोटे कद के मनुष्य, जो कि गुलाबी रंग की पगड़ी बाँधे खड़ा है, के रुप में मानवीकरण किया गया है।
2. यहाँ अलसी के पौधे को हठीली तथा रमणीय स्त्री के रुप में प्रस्तुत किया गया है। अत: यहाँ अलसी के पौधे का मानवीकरण किया गया है।
3. यहाँ सरसों के पौधें को एक नायिका के रुप में प्रस्तुत किया गया है, जिसका ब्याह होने वाला है।
4. यहाँ पत्थर जैसे निर्जीव वस्तु को भी मानवीकरण के द्वारा जीवित प्राणी के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 8 कविता में से उन पंक्तियों को ढूँढ़िए जिनमें निम्नलिखित भाव व्यंजित हो रहा है–

और चारों तरफ़ सुखी और उजाड़ ज़मीन है लेकिन वहाँ भी तोते का मधुर स्वर मन को स्पंदित कर रहा है।

उत्तर- चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी

कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ

दूर दिशाओं तक फैली हैं।

बाँझ भूमि पर

इधर-उधर रींवा के पेड़

काँटेदार कुरूप खड़े हैं।

सुन पड़ता है

मीठा-मीठा रस टपकाता

सुग्गे का स्वर

SHIVOM CLASSES 8696608541

टें टें टें टें;

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न (पृष्ठ संख्या 123)

प्रश्न 1 'और सरसों की न पूछो' - इस उक्ति में बात को कहने का एक खास अंदाज़ है। हम इस प्रकार की शैली का प्रयोग कबऔर क्यों करते हैं?

उत्तर- एक वस्तु की बात करते हुए दूसरे वस्तु के बारे में बताने के लिए हम इस शैली का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की शैली का प्रयोग वस्तु की विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करने तथा बात में रोचकता बनाए रखने के लिए किया जाता है।

प्रश्न 2 काले माथे और सफ़ेद पंखों वाली चिड़िया आपकी दृष्टि में किस प्रकार के व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है?

उत्तर- काले माथे और सफ़ेद पंखों वाली चिड़िया यहाँ पर दोहरे व्यक्तित्व का प्रतीक हो सकती है। ऐसे लोग एक और तो समाज के हितचिंतक बने फिरते हैं और मौका मिलते ही अपना स्वार्थ साध लेते हैं।

भाषा-अध्ययन प्रश्न (पृष्ठ संख्या 123)

प्रश्न 1 बीते के बराबर, ठिगना, मुरैठा आदि सामान्य बोलचाल के शब्द हैं, लेकिन कविता में इन्हीं से सौंदर्य उभरा है और कविता सहज बन पड़ी है। कविता में आए ऐसे ही अन्य शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर- फ़ाग, मेड़, पोखर, हठीली, सयानी, ब्याह, मंडप, फ़ाग, चकमकाता, खंभा, चटझपाटे, सुग्गा, जुगुल, जोड़ी, चुप्पे-चुप्पे आदि।

प्रश्न 2 कविता को पढ़ते समय कुछ मुहावरे मानस-पटल पर उभर आते हैं, उन्हें लिखिए और अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर-

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मुहावरे	अर्थ	वाक्य
बीता-भर	छोटा-सा	बीता भर की दिखने वाली यह लड़की, और बातें तो देखो इतनी बड़ी-बड़ी करती है।
सिर चढ़ाना	बढ़ावा देना	बच्चों को इस तरह लाड़ प्यार देकर सिर पर चढ़ाना अच्छी बात नहीं है।
हृदय का दान देना	समर्पित होना	कृष्ण और राधा एक दूसरे को हृदय का दान दे चूके थे।
हाथ पीले करना	विवाह योग्य होना	बेटी के माता-पिता की यही इच्छा होती है कि वे उचित समय पर अपनी बेटी के हाथ पीले कर दें।
गले में डालना	जल्दी से खाना	मालिक को आता देख मजदूरों ने रोटियाँ गले में डाल लीं।
हृदय चीरना	दिल को दुःख पहुँचना	पति की मृत्यु का समाचार पत्नी के हृदय को चीरकर रख देता है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)